-: द्वितीय अध्याय :-

ग्रामीण संस्था - परिचय

द्वितीय अध्याय

भ्रमरगीत परंपरा - परिचय

ब्रजभाषा काव्य - परंपरा ने हिंदी साहित्य में एक विशेष स्थान प्राप्त किया है । इस काव्य की अनेक विशेषताएँ हैं । गीतिकाव्य की प्रेरणा इन कवियों को मुरलीधर कृष्ण से प्राप्त हो चुकी । भक्तिकाल के कवियों ने अपने बारेमें कुछ नहीं लिखा । भगवान कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करने में वे इतने मग्न हुए कि महाकवि बनने की इच्छा ही उन्हें नहीं रही । कृष्ण का वर्णन उन्होंने लोकरक्षक या महाभारत का सूत्रधार आदि रुप में नहीं किया बल्कि उनका मन कृष्ण की मनोहारी लीलाओं में अधिक रमा है । जैसे - बाललीला, गोवर्धन लीला, दानलीला, मानलीला, भ्रमरगीत आदि । इन सब में लोकप्रिय भ्रमरगीत है । यह परंपरा लोगों को आज भी प्रिय है । इसका प्रमाण है कि सूरदास से प्रारंभ होकर हिन्दी काव्य में आज तक यह परंपरा शुरु है । ` इस परंपरा की आधारशिला रखने का श्रेय महात्मा सूरदासजी को है, जिन्होंने सूरसागर में भ्रमरगीत लिखकर परवर्ति समस्त ब्रजकवि रचयिताओं को ऐसा मनमोहक विषय दिया कि कृष्ण जीवन पर लेखनी उठाते हुए कोई भी कवि इस संदर्भ पर कुछ - न - कुछ रचना करने का लोभ - संवरण न कर सका । `[1]

मानव और प्रकृति का संबंध अत्यंत प्राचीन है । मानव प्रकृति में अपनी भावनाओं का, विचारों का प्रतिबिंब देखता है । प्रकृति से वह प्रेरणा भी प्राप्त करता है । संसार में प्रेम के क्षेत्र में स्वार्थी पुरुष और कलियों का रस चूसते हुए घूमनेवाला भ्रमर इन दोनों में साम्य दिखाई देता है । लोभी, स्वार्थी पुरुष एक स्त्री को छोडकर दूसरी से प्यार करने लगता है, उसी प्रकार भ्रमर भी इस फूल से उस फूल पर मुक्तता से घूमता रहता है । विरहिणी नायिकाओं ने भ्रमर

को प्रतीक मानकर अपनी विरह अवस्था को प्रकट करने का प्रयत्न किया है। भावुक कवियों ने भी भ्रमर को एक प्रतीक मानकर उसके माध्यम से नारी का पुरुष के प्रति उपालंभ, व्यंग्य स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

' भारतीय काव्य में भ्रमर के माध्यम से उपालंभ व्यंजना की शुरुआत प्रेम और सौन्दर्य के अमर कलाकार कवि कालिदास ने ' अभिज्ञान शाकुंतलम् ' नाटक में की है।'[2] राजा दुष्यंत कभी एक स्त्री से प्रेम का अभिनय करते हैं, तो कभी दूसरी से। दुष्यंत ने महारानी हंसपदिका से सिर्फ एक बार प्यार किया था। उसके बाद वह रानी वसुमति से प्यार करने लगे, तब रानी हंसपदिका भ्रमर के माध्यम से दुष्यंत को उपालंभ देती हैं। ' श्रीमद्भागवत ' के अनुसार उद्धव श्रीकृष्ण का संदेश गोपियों को देने के लिए मथुरा से ब्रज आ गये, तब गोपियों ने उद्धव के सामने भ्रमर के माध्यम से अपनी मनोव्यथा प्रकट की।

भ्रमरगीतकारों में अधिकतर कवि सगुण भगवान की उपासना करनेवाले थे। इन कवियों ने ज्ञान की अपेक्षा प्रेम और भक्ति को महत्व दिया है। ' भ्रमरगीतों में दार्शनिक मत शुष्क रूप में प्रकट नहीं हुए हैं बल्कि ये परम भावुक गोपियों की सरस तल्लीनता से भावार्द्र होकर अति मधुर बन गये हैं।'[3] भ्रमरगीत में भक्तिकाल की नारी - भावनाओं का भी चित्रण हुआ है। पुरुष के साथ नारी के विविध संबंधों को, सामाजिक न्याय की भी अभिव्यक्ति हुई है। उपालंभ के द्वारा भ्रमरगीत काव्य को अधिक आकर्षक बनाया गया है। नारी - जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने के साथ - साथ नारी की सहज लज्जा का चित्रण भी आकर्षक बन गया है। भारतीय नारी की नम्रता, शक्ति, सद्भावना आदि इसमें प्रकट हुई हैं। भ्रमरगीत में पुष्टिमार्गीय भक्ति का भी सुंदर प्रतिपादन हुआ है। निर्गुण ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग कठिण है। इसकारण भगवान के निर्गुण एवं सगुण दोनों स्वरूपों का स्वीकार करते हुए सगुण ब्रह्म की उपासना का उपदेश इसमें दिया गया है।

भ्रमरगीत का अर्थ --

'भ्रमरगीत' यह शब्द 'भ्रमर' और 'गीत' इन दो शब्दों के योग से बना हुआ है। भ्रमर काले रंग का उडनेवाला जीव होता है। इसे भिन्न - भिन्न नामों से पहचाना जाता है। जैसे मधुप, मधुकर, अलि, अलिंद, भृंग आदि। दूसरा शब्द है 'गीत' इसका अर्थ है 'गाना'। इस प्रकार 'भ्रमरगीत' का शाब्दिक अर्थ है 'भौंरे का गीत'।

साहित्य में 'भ्रमरगीत' यह शब्द विशिष्ट अर्थ में आया है। इस शब्द का संबंध कृष्ण तथा उसके मित्र ज्ञानी उद्धव से है। कृष्ण मथुरा चले गये। इधर गोपियाँ विरह में तडपने लगीं। इन गोपियों को समझाने के लिए कृष्ण उद्धव को ब्रज भेजते हैं। उद्धव के सामने गोपियों ने भ्रमर को संबोधित कर अपने भाव प्रकट किये। इसी कारण इस प्रसंग को 'भ्रमरगीत' नाम से पुकारा जाता है।

भ्रमरगीत का सांकेतिक अर्थ इस प्रकार है ---

(१) भ्रमरगीत में मुख्य चरित्र उद्धव हैं। उद्धव का रंग काला है और वे पीला वस्त्र पहनते हैं। भ्रमर भी काले रंग का होता है और उस पर पीले रंग के चिह्न होते हैं। इस प्रकार उद्धव का भ्रमर से साम्य मिलता है। यहाँ उद्धव भ्रमर के प्रतीक रूप में आये हैं।

(२) कृष्ण और भ्रमर में भी साम्य दिखाई देता है। कृष्ण का वर्ण भ्रमर की तरह काला (श्याम) है। कृष्ण जिस प्रकार पीतांबर धारण करते हैं, उसी प्रकार भ्रमर के शरीर पर भी पीले रंग के चिह्न होते हैं। भ्रमर गुनगुनाकर सभी का मन अपनी ओर आकर्षित करता है, वैसे ही कृष्ण भी मुरली की धुन से सभी को मोहित करते हैं। भ्रमर केवल एक फूल का रस ग्रहण न करते हुए एक फूल से दूसरे फूल पर जा बैठता है। ठीक ऐसे ही कृष्ण भी ब्रज की गोपियों को त्यागकर मथुरा चले गये और वहाँ कुब्जा से प्यार करने लगे। इस प्रकार भ्रमर और कृष्ण दोनों भी

रसिक है। कृष्ण का यह रूप उसे भ्रमर के प्रतीकार्थ रूप में प्रस्तुत करता है।

डॉ.सत्येन्द्र ने भ्रमर शब्द के सात अर्थ दिये हैं। उनमें से तीन अर्थ शरद कणाबरकरजी ने उल्लेखनीय बताये हैं ---

१) 'भ्रम में पडा हुआ या भ्रम में डालनेवाला'

२) 'पति' या 'नायक'

३) 'षाट्पदी छंद'।

प्रथम अर्थ की दृष्टि से स्वयं भ्रम में पडे हुए भ्रमर उद्धव हैं, तो भ्रम में डालनेवाले भ्रमर कृष्ण हैं।

दूसरे अर्थ की दृष्टि से श्रीकृष्ण गोपियों के पति या नायक थे। भ्रमर श्रीकृष्ण पति या नायक को संबोधित कर लिखा गया गाना याने भ्रमरगीत।

तीसरे अर्थ की दृष्टि से भ्रमर छ: पदों का होता है, भ्रमरगीत छंद में छ: पंक्तियों की रचना की जाती है। यह एक मात्रिक छंद है। इसमें प्रथम चार-चार चरणों में २४-२४ मात्रायें होती हैं। अंतिम दो चरणों में १०-१० मात्रायें होती हैं। हिन्दी भ्रमरगीत लिखनेवाले सभी कवियों ने इस छंद का प्रयोग नहीं किया है।

भ्रमरगीत के लक्षण ---

श्री.कणाबरकरजी ने भ्रमरगीत के निम्नलिखित लक्षण बताये हैं ---

१) 'गोपियों को सांत्वना देने के लिए उद्धव का ब्रज आना।'

२) 'भ्रमर का आगमन - उसको लक्ष्य कर गोपियों का अपनी विरह - व्यथा व्यक्त करना - कृष्ण के प्रति उपालंभ तथा कुब्जा के प्रति व्यंग्योक्तियाँ प्रकट करना।'

३) 'उद्धव गोपी संवाद - निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन।'

४) 'उद्धव का निरुत्तर होना - ज्ञान और योग पर प्रेम और भक्ति की विजय।'

इन्हीं लक्षणों से युक्त रचना को हिन्दी में 'भ्रमरगीत' कहा जाता है।

काव्य शास्त्र की दृष्टि से भ्रमरगीत का संबंध वियोग शृंगार से है। `यह उपालंभ काव्य है, जिसमें गोपियों ने भ्रमर के व्याज से उद्धव और उद्धव के व्याज से कृष्ण पर व्यंग्य किये हैं।` [४]

इस दृष्टि से भ्रमरगीत को दो विभागों में विभाजित किया जा सकता है --

(१) व्यंग्यप्रधान --

इस कोटि की रचनाओं का संबंध उद्धव से है। उद्धव और उनका ज्ञानोपदेश तथा निर्गुण ब्रह्मोपासना पर व्यंग्य किया है। इसका प्रतिपादन करनेवाले उद्धव, ज्ञान तथा कर्मकाण्ड में विश्वास करनेवाले भक्त के प्रतीक हैं।

(२) उपालंभप्रधान --

इसका संबंध कृष्ण से है। इसमें कृष्ण की स्वार्थी वृत्ति को आधार मानकर उन्हें उपालंभ दिया गया है।

इस प्रकार भ्रमरगीत का उद्देश्य ज्ञान पर प्रेम की विजय दिखाकर सगुण - साकार की श्रेष्ठता दिखलाना यही है।

भ्रमरगीत परंपरा --

`श्रीमद्भागवत` के दशमस्कंध के पूर्वार्द्ध के ४६ वें तथा ४७ वें अध्याय का आधार भ्रमरगीत के लिए लिया गया है। इसमें उद्धव के ब्रज आने की कथा का वर्णन किया गया है। इसी कथा को आधार मानकर अनेक भ्रमरगीतों की रचना हुई है। दूर के रिश्तेदारों को दूत के द्वारा हम संदेश भेजते हैं। इससे वियोगी व्यक्ति कुछ क्षण के लिए आनंदित होता है। कृष्ण ने भी उद्धव को अपना दूत बनाकर ब्रज भेजा। अपने मित्र उद्धव से कहा, `तुम ब्रज चले जाओ और माता यशोदा, पिता नंदबाबा और विरह में व्याकुल गोपियों को मेरा संदेश सुनाकर उन्हें शांति दो।` संध्या के समय उद्धव ब्रज पहुँचे। उन्होंने सारी रात नंद-यशोदा को समझाया। नंदबाबा भी कृष्ण की स्तुति करते रहे। कृष्ण की

बाललीलाओं को याद करके उनका गला भर आया । उद्धव उनके परब्रह्म स्वरूप का वर्णन करने लगे । माता यशोदा भी चुपचाप सुनती हुई कृष्ण की यादों में रोती रही । सुबह नंदबाबा के द्वार पर सोने का रथ देखकर गोपियाँ शंका करने लगीं कि यह रथ किसका है ? एक गोपी ने कहा कि अक्रूर तो फिर नहीं आ गया ? किसी दूसरी गोपी ने कहा कि अब यहाँ उसके आने का कारण क्या है ? इस प्रकार गोपियाँ आपस में बातें करने लगीं । उसी समय उद्धव वहाँ आ पहुँचे ।

कृष्ण समान वेश धारण किए उद्धव को गोपियों ने देखा । कमल की तरह आँखे, कटि पर पीतांबर, गले में कमल - फूलों की माला, कानों में मणियों से जड़े हुए कुंडल यह सब देखकर उन्हें कृष्ण की याद आने लगी । जब उन्होंने जाना कि उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर आये हैं, तब उन्होंने उसका आदर के साथ स्वागत किया । उद्धव से परिचय जानने के लिए वे उत्सुक हो गयीं । बाद में वे कृष्ण के प्रति अपना विरह व्यक्त करने लगीं । वे कहती हैं आपके स्वामी ने अपने माता - पिता का दुःख दूर करने के लिए आपको यहाँ भेजा है, हमारा दुःख दूर करने के लिए नहीं । अपने सगे-संबंधियों का स्नेहानुबंध ऋषि-मुनि भी बड़ी कठिनाई से छोड़ पाते हैं । दूसरों के साथ जो प्रेम - संबंध का स्वांग किया जाता है, वह तो किसी - न - किसी स्वार्थ के लिए ही होता है, भौंरों का पुष्पों से और पुरुषों का स्त्रियों से ऐसा ही स्वार्थ का प्रेमसंबंध होता है । स्वार्थ पूरा होने पर सभी भूल जाते हैं ।`

` अन्येष्वर्थकृता मैत्री यावदर्थविडम्बनम् ।।
पुम्भिः स्त्रीषु कृता यद्वत् सुमनस्स्विव षट्पदैः ।।` [5]

उद्धव के सामने अपने दुःख को व्यक्त करते हुए गोपियाँ श्रीकृष्ण की याद में तल्लीन हो गयीं । वे भगवान कृष्ण की बचपन से लेकर किशोरावस्था तक की लीलाओं का गान करने लगीं । कृष्ण की यादों में वे बीच-बीच में रोने भी लगीं । एक गोपी को उस समय भगवान कृष्ण की लीला याद आने लगी । उसी समय उसने देखा कि पास ही एक भौंरा गुनगुना रहा है । उसने समझा कि उसे रूठी हुई

समझाकर कृष्ण ने मनाने के लिए दूत भेजा हो । वह गोपी कहने लगी, `हे मधुकर ! तुम कपटी सखा हो । हमारे पैरों को तुम स्पर्श मत करो । तुम अब मथुरा की नायिकाओं को ही मनाया कर । तुम्हारी मूँछों पर यह जो कुमकुम लगा हुआ है वह यदुवंशियों को शोभा नहीं देता । जैसे तुम काले हो, वैसे ही कृष्ण भी [redacted] । जब वे राम बने थे तब उन्होंने कपिराज वालि को बड़ी निर्दयता से मारा था । हमें कृष्ण से तो क्या और किसी भी काली वस्तु से मित्रता नहीं चाहिए ।`

इसप्रकार कृष्ण की निष्ठुरता पर व्यंग्य करते हुए भी गोपियाँ कृष्ण को भूलने के लिए तैयार नहीं थीं । प्रियतम कृष्ण के दर्शन के लिए वे उत्सुक और व्याकुल हो रही थीं । कृष्ण को भूलना उनके लिए कठिण कार्य था । एक ओर वे कृष्ण को उपालंभ दे रही थीं, तो दूसरी ओर अपने उत्कट प्यार को व्यक्त कर रही थीं । उनके इस प्रेम को देखकर उद्धव भी उनकी प्रशंसा किये बिना न रह सके । वे गोपियों से कहने लगे `तुम धन्य हो, तुम्हारा जीवन सफल है ।` गोपियों ने कृष्ण को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था । जो प्रेम-भक्ति भगवान के प्रति गोपियों ने प्राप्त की थी, वह सचमुच ही महान थी ।

गोपियों का कृष्ण के प्रति असीम प्यार देखकर उद्धव कृष्ण का संदेश सुना देते हैं । कृष्ण के इस संदेश में वे कृष्ण के निर्गुण - रूप के बारेमें कहते हैं । भगवान कृष्ण का संदेश है, `मैं सब का उपादान कारण होने से सब की आत्मा हूँ, सभी ओर रहता हूँ । इसकारण मुझसे तुम्हारा वियोग कभी नहीं हो सकता । मैं सृष्टि के कण-कण में व्याप्त हूँ । जिसप्रकार सृष्टि के भौतिक पदार्थों में आकाश, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी ये पंचतत्व व्याप्त हैं, उसीप्रकार मैं भी मन, प्राण, पंचभूत, इंद्रिय आदि में व्याप्त हूँ । इसकारण जब तुम मेरा स्मरण करोगी, तब जल्द ही सदा के लिए मुझे प्राप्त हो जाओगी । जिस समय मैंने वृंदावन में शरद ऋतु की पूर्णिमा की रात्रि में रास-क्रीडा की थी, उस समय कुछ गोपियाँ घर के लोगों ने रोक लेने के कारण रास-क्रीडा में शामिल न हो सकीं । ये गोपियाँ भी मेरी लीलाओं का स्मरण करने के कारण मुझे प्राप्त हो गयीं । उसीप्रकार मैं भी तुम्हें अवश्य प्राप्त हो जाऊँगा, निराशा की कोई बात नहीं ।`

उद्धव से कृष्ण का संदेश सुनकर गोपियाँ बहुत आनंदित हुईं। वे भगवान कृष्ण को सभी ओर व्याप्त समझने लगीं। बाद में वे बार-बार कृष्ण के प्रति अपना प्यार व्यक्त करने लगीं। गोपियाँ अपने साथ ब्रज के गोप, ग्वाल, माता-पिता और गौओं का विरह-दुःख भी व्यक्त करती हैं। उन्होंने आगे उद्धव से पूछा, 'क्या कृष्ण हमें कभी याद करते हैं? वे हमें भूल तो नहीं गये? वे अब हम जैसी गोपियों के पास क्यों आयेंगे? लेकिन हम तो मरकर भी उन्हें भूल नहीं सकतीं। उनकी हर बात हमें याद है। कृष्ण हमारे जीवन के स्वामी हैं।' वे आगे कहती हैं, 'हे कृष्ण! आओ हमारी रक्षा करो। तुमने हमारा दुःख दूर किया है। तुम्हारे बिना यह सारा गोकुल उदास तथा सूना-सूना लगता है। इसलिये आओ और विरह-दुःख से हमें मुक्ति दो।' इस प्रकार गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपना अनन्य प्रेम व्यक्त करती हैं।

उद्धवजी गोपियों का दुःख दूर करने के लिए कई महिनों तक वहाँ रहे। गोपियों का विरह दुःख भी थोडा शांत हो गया। उद्धवजी कृष्ण के बारेमें बताकर गोपियों का मनोरंजन करते रहे। नदी, वन, पर्वत आदि सभी ओर उद्धव घूमते रहते और खुद भी कृष्ण की लीलाओं की याद में तन्मय हो जाते। गोपियों का यह विरह-दुःख तथा कृष्ण के प्रति प्यार देखकर उनका हृदय भावों से भर आया। गोपियों को नमस्कार करते हुए वे कहने लगे कि ये गोपियाँ धन्य हैं। पृथ्वी पर इन गोपियों का जीवन धारण करना बडे भाग्य की बात है क्योंकि उन्होंने अपना तन-मन कृष्ण के लिए अर्पित किया है। तपस्या करने के बाद भी यह अवस्था प्राप्त नहीं होती। ये गोपियाँ गँवार थीं, फिर भी कृष्ण से सच्चे दिल से प्यार करने के कारण उनका कल्याण हो गया।

गोपियों का कृष्ण के प्रति यह प्यार देखकर उद्धव बहुत प्रभावित हुये। वे सोचने लगे कि मैं इस वृंदावन में कोई वृक्ष, लता, पौधा आदि में से कोई बन जाऊँ। इन गोपियों की चरण धूली को पाकर मैं धन्य हो जाऊँगा। —

'आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां
वृंदावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम् ।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्य पथं च हित्वा
भेजुर्मुकुंदपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ।।'[६]

इस प्रकार ज्ञानी उद्धव आखिर प्रेमी बन जाते हैं।

कुछ दिन वहाँ रहने के बाद उद्धव वापस लौट आये । वहाँ पहुँचकर उन्होंने भक्तिभाव से कृष्ण के चरण छुए और ब्रज में जो देखा था, वह सब कुछ बता दिया । ब्रजवासियों ने जो वस्तुएँ दी थीं, उन्हें सब में बाँट दिया ।

हिंदी साहित्य में भ्रमरगीत के लिए भागवत की इसी कथा का आधार लिया गया लेकिन बाद में कवि-कल्पना,आसपास की परिस्थितियाँ आदि के कारण इस कथा में परिवर्तन आये । भागवत की इसी कथा के माध्यम से आंतरिक भाव व्यक्त होने लगे । सूरदास,नंददास आदि कवियों के भ्रमरगीतों में भक्ति तथा प्रेम की श्रेष्ठता को अभिव्यक्त किया गया है । ज्ञान की नीरसता की अपेक्षा प्रेम की सरसता को अनेक कवियों ने अपने भ्रमरगीतों में स्थान दिया ।

भ्रमरगीत लिखनेवालों में सूरदासजी अग्रगण्य हैं । उनके 'भ्रमरगीत' के बाद अन्य कवियों ने भ्रमरगीतों की रचना की है ।

भ्रमरगीत परंपरा - विकास ---

भ्रमरगीत यह एक सरस एवं सुंदर काव्य प्रकार है । सभी कालों में कवियों ने इस विषय को अपनाया है । इस परंपरा ने केवल कवियों को ही आकर्षित नहीं किया बल्कि साधारण जनता को भी यह विषय प्रिय रहा है । साहित्य के साथ-साथ लोकगीतों के द्वारा जनता में भी इस विषय का प्रसार हुआ । कवि या साहित्यकार अलंकारिक भाषा के द्वारा गोपी-विरह वर्णन प्रस्तुत करते हैं तो लोकगीतकार सहज एवं सरल भावाभिव्यक्ति के द्वारा जनता को प्रभावित करते

हैं । भ्रमरगीत की यह धारा भक्तिकाल से लेकर आज तक दिखाई देती है । इसे हम तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं ---

अ) भक्तिकाल

ब) रीतिकाल

क) आधुनिक काल

(अ) भक्तिकाल --

सगुण भक्तिकाव्य के कृष्ण भक्त कवियों ने भ्रमरगीत पर लिखा है । इन कवियों में सूरदास, परमानंददास, नंददास, वृंदावनदास तथा रामभक्त तुलसी आदि प्रमुख हैं ।

१) सूरदास --

हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत लिखनेवालों में सूरदासजी का नाम सर्वप्रथम है । सूरदासजी ने 'श्रीमद्भागवत' के दशमस्कंध का आधार लेकर भ्रमरगीत की रचना की । उनका भ्रमरगीत हिन्दी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है ।

सूरदासजी ने तीन भ्रमरगीतों की रचना की है ----

(१) प्रथम भ्रमरगीत में ज्ञान और वैराग्य की चर्चा की है । कवि ने इस भ्रमरगीत की रचना दोहा चौपाई छंद में की है ।

(२) दूसरा भ्रमरगीत केवल एक पद में मिलता है । इसमें भ्रमर आगमन के बारेमें कुछ नहीं लिखा गया है । इसमें गोपियों को उद्धव का उपदेश, गोपियों का उपालंभ देना, उद्धव का मथुरा वापस आकर कृष्ण के सामने गोपियों का विरह-वर्णन कथन करना आदि बातों का वर्णन एक ही पद में मिलता है ।

(३) तीसरा भ्रमरगीत विशाल बन गया है । इसमें पुष्टि-संप्रदाय के दार्शनिक विचारों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है । इसके साथ - साथ सगुण की निर्गुण पर विजय भी दिखलाई गयी है । यह

`भ्रमरगीत` अधिक सुंदर तथा सरस बन गया है । इसमें भ्रमर के माध्यम से गोपियाँ उद्धव को उपालंभ देती हैं । सूरदासजी का यह भ्रमरगीत अत्यंत आकर्षक बन गया है ।

२) परमानंददास --

परमानंददासजी ने गोपी-उद्धव संवाद और भँवरगीत संबंधी पद लिखे हैं । उन्हें इस परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका है । परमानंददासजी ने निर्गुण का खण्डन और सगुण का मण्डन किया है । उनकी अभिव्यक्ति उत्कट बन गयी है । इनकी गोपियाँ प्रेम में पागल तथा भोली-भाली हैं । इनके भ्रमरगीत में सूरदास तथा नंददास के जैसा विस्तृत वर्णन नहीं हुआ है ।

३) नंददास --

सूरदासजी के बाद नंददासजी का `भँवरगीत` हिन्दी साहित्य में दूसरी महत्वपूर्ण रचना है । इस रचना के लिए नंददासजी ने भागवत का ही आधार लिया है । इसमें केवल ७५ पदों की रचना की गई है । उन्होंने ४६ वें अध्याय की कथा को छोड दिया है । उनका `भँवरगीत` गोपी-उद्धव संवाद से प्रारंभ होता है । नंददासजी की गोपियाँ सूरदासजी की गोपियों की अपेक्षा अधिक तर्कशील और चतुर दिखाई देती हैं ।

४) वृंदावनदास --

`भक्तिकालीन कवियों में वृंदावनदास सूर और नंद की परिपाटी के ऐसे कवि हैं, जिन्होंने भ्रमरगीत परंपरा को विकासोन्मुख किया ।` उन्होंने दो प्रकार के भ्रमरगीतों की रचना की है ---

(१) प्रथम गीत सूर की तरह एक ही पद में लिखा गया है ।
(२) दूसरे गीत में यशोदा का मातृस्नेह तथा गोपियों का विरह-वर्णन चित्रित किया गया है । यह भ्रमरगीत प्रथम की अपेक्षा अधिक व्यापक हो चुका है ।

५) तुलसीदास --

गोस्वामी तुलसीदासजी ने गोपियों के सात्विक उपालंभ का चित्रण किया है। ये राममक्त कवि है। उन्होंने 'कृष्ण-गीतावली' और 'कवितावली' में भ्रमरगीत का प्रयोग किया है। इसमें तुलसीदासजी की मर्यादावादी दृष्टि दिखाई देती है। तुलसी की गोपियाँ अत्यंत नम्र, शील तथा भक्तिभावों से युक्त है। वे उद्धव के साथ विवाद नहीं करतीं। उनमें तर्क करने की प्रवृत्ति नहीं है। सहज प्रेम, विनय और भक्ति से वे ज्ञानी उद्धव को पराजित करती है। तुलसीदासजी के इन भ्रमरगीतों में प्रेम की अलौकिकता का सुंदर चित्रण हुआ है।

इन कवियों के अतिरिक्त हरिराय, मलूकदास, मुकुंददास, रसखान आदि की चर्चा की जा सकती है। रहीम ने छंद में मुक्तक रूप से भ्रमरगीत की रचना की।

ब) रीतिकाल --

रीतिकाल में भ्रमरगीत प्रसंग पर फुटकर रचना करनेवाले कवियों में मतिराम, देव, घनानंद, पद्माकर सेनापति आदि प्रमुख कवि है।

(१) मतिराम --

मतिरामजी ने स्वतंत्र रूप से भ्रमरगीत की रचना नहीं की। गोपियों का विरह - वर्णन करते-करते भ्रमरगीत की अभिव्यक्ति हुई है। मतिराम की गोपियाँ स्पष्ट तथा चंचल है। मतिराम ने कभी परंपरा के आधार पर वर्णन किया है तो कभी परंपरा को छोडकर मौलिक चित्रण किया है। ये गोपियाँ सहृदया तथा बुद्धिमती भी हैं। इनकी गोपियों में उद्धव के प्रति आदर विशेष रूप से दिखाई देता है।

(२) देव --

रीतिकाल के भ्रमरगीत रचनाकारों में देव ने अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक लिखा है। देव की भी स्वतंत्र रचना नहीं है, फुटकल पदों में इस प्रसंग पर

लिखा है । गोपियों का विरह सरस तथा मार्मिक बन गया है । भक्ति की अपेक्षा प्रेम का चित्रण अधिक है । अलंकारिक भाषा का प्रभाव इस पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । कुब्जा के प्रति कृष्ण का प्यार उन्हें अच्छा नहीं लगता । देव की गोपियों पर रीतिकाल की स्पष्ट छाप दिखाई देती है । भ्रमरगीत परंपरा के विकास में ये पद महत्वपूर्ण माने जाते हैं ।

(३) घनानंद --

अन्य कवियों की तरह घनानंद ने भी निर्गुण और सगुण का वाद दिखलाकर सगुण की विजय दिखलाई है । इनकी गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपना एकनिष्ठ प्रेम व्यक्त किया है । इसमें भ्रमर की स्वार्थी वृति स्पष्ट हो गई है । घनानंद ने अपने भ्रमरगीत की रचना मुक्तक रूप में की है । उनकी रचनाओं में भ्रमरगीत संबंधी पद एकत्र नहीं मिलते बल्कि बिखरे हुए दिखाई देते हैं ।

(४) पद्माकर --

भ्रमरगीत परंपरा में इनका नाम विशेष महत्वपूर्ण है । पद्माकर ने भी फुटकल पदों के रूप में ही लिखा है । इनकी गोपियों में कृष्ण के प्रति अत्यंत तन्मयता दिखाई देती है । प्रेम की भावुकता तथा कुब्जा के प्रति व्यंग्य इन पदों में सुंदरता से चित्रित हुआ है ।

(५) सेनापति --

इस प्रसंग पर सेनापति ने एक - दो छंदों में लिखा है । श्लेष अलंकार के माध्यम से कवि ने लिखा है । इनकी गोपियाँ बुद्धिमानी हैं । कृष्ण और ब्रह्म को दृष्टि में रखकर इनकी गोपियाँ प्रेम का महत्व स्पष्ट करती हैं । यहाँ कृष्ण को महत्वपूर्ण स्थान मिला है ।

इन कवियों के साथ - साथ रसखान, हरिराय, भिखारीदास, आलम, ठाकुर आदि की भी चर्चा है। भक्तिकाल से चली आई हुई यह परंपरा रीतिकाल में भी बनी रही लेकिन रीतिकाल में भ्रमरगीत परंपरा का यह विषय घिसे-पीटे रूप में रहा। कथा की ओर भी विशेष ध्यान नहीं दिया गया। केवल मधुप, भ्रमर आदि कहकर काम चलाया जाता था।

क) आधुनिक काल --

आधुनिक काल में इस परंपरा में बहुत प्रगति हुई। परिस्थिति के अनुसार इसमें परिवर्तन हुआ। आसपास की घटनाओं का इस पर प्रभाव पडा। भ्रमरगीत की रसमयता की ओर इन कवियों ने ध्यान दिया। "भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र ने इस विषय पर लगभग ५० स्फुट पदों की रचना की थी, जिनमें सूरदासजी का स्पष्ट अनुसरण मिलता है।" आधुनिक काल के भ्रमरगीतों में फुटकल एवं स्वतंत्र दोनों भ्रमरगीत रचे गये।

१) भारतेन्दु --

भारतेन्दु ने फुटकल पदों में भ्रमरगीत की रचना की है। इसमें सूर के भ्रमरगीत का थोडा-थोडा अनुकरण मिलता है। सूर की तरह भारतेन्दु के भ्रमरगीत में उद्धव को ब्रज भेजना, वहाँ उसका सत्कार करना आदि बाते हैं। उद्धव का ज्ञानमयी उपदेश सुनकर गोपियाँ क्रोधित हो गयीं। भारतेन्दु ने इसी प्रसंग में ज्ञान और भक्ति के बारेमें कहा है।

२) प्रेमघन --

भारतेन्दु के बाद इस परंपरा में प्रेमघन का नाम लिया जाता है। उनके भ्रमरगीत पर भी सूर का प्रभाव देखने मिलता है। उद्धव का ज्ञान और योग का उपदेश इसमें भी है। यहाँ गोपियाँ अपने सरल, सहज तर्कों से उद्धव को पराजित करती हैं।

३) सत्यनारायण कविरत्न --

आधुनिक काल में भ्रमरगीत प्रसंग पर सत्यनारायणजी ने स्वतंत्र रूप से रचना की है । स्वतंत्र रचना करनेवालों में वे प्रथम कवि हैं। अपने ` भ्रमरदूत ` नामक ग्रंथ में उन्होंने परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किया है । इसमें भारत की निराशाजनक परिस्थिति का चित्रण किया है । इसमें माता यशोदा का विरह - वर्णन प्रमुख है । माता यशोदा में भारतमाता के दर्शन होते हैं। यशोदा माता भ्रमर को दूत बनाकर कृष्ण के पास भेजती है । इसमें देश की सामाजिक , राजनीतिक अधोगति चित्रित की गयी है ।

४) हरिऔध --

इसमें हरिऔधजी ने समाज कल्याण और विश्वप्रेम का चित्रण किया है । यहाँ कृष्ण तथा भ्रमरगीत का नया पक्ष प्रस्तुत किया गया है । इसमें राधा ने उद्धव के सामने अपने वैयक्तिक, लोक कल्याणकारी,अध्यात्मिक प्रेम को प्रस्तुत किया है । ` राधा वियोगावस्था में भी आदर्शों को नहीं भूलती । जब वह उडते हुए भ्रमर को देखती है,तो नंदनंदन के रूपसाम्य के कारण प्रियतम की स्मृति उनके हृदय में आ जाती है । ` [१]

५) रत्नाकर --

` उद्धव - शतक ` रत्नाकरजी की महत्वपूर्ण रचना है । इस रचना में प्राचीन और नवीन, यथार्थ और आदर्श आदि का सुंदर समन्वय किया गया है । इसमें विरह से राधा,कृष्ण,गोपियाँ आदि सभी पीडित हैं। कृष्ण ब्रज के दर्शन के लिए व्याकुल हैं। इसके माध्यम से मातृ-भूमि की भक्ति को स्पष्ट किया है । रत्नाकरजी की गोपियाँ स्पष्टवादी हैं।

६) मैथिलीशरण गुप्त --

गुप्तजी ने 'द्वापर' में भ्रमरगीत परंपरा के बारेमें लिखा है । इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से कुब्जा ,यशोधरा,उर्मिला,कैकेयी आदि उपेक्षित स्त्रियों को प्रधानता दी है । इसमें कुब्जा के प्रति सहृदयता तथा सहानुभूति दिखाई देती है । उनकी गोपियाँ शील और विनय से युक्त दिखाई देती हैं ।

निष्कर्ष ----

इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि भ्रमर को प्रतीक मानकर अनेक कवियों ने अपने भाव व्यक्त किये हैं। भ्रमर एक विशेष मानवीय प्रवृत्ति का प्रतीक माना गया है । भ्रमर जिस प्रकार एक फूल से दूसरे फूल पर उडकर फूलों का रस चूसता रहता है, उसी प्रकार स्वार्थी पुरुष भी एक स्त्री को छोडकर दूसरी स्त्री से प्यार करने लगता है । भ्रमरगीतकारों ने इसके माध्यम से गोपियों का विरह - वर्णन प्रस्तुत किया है लेकिन यह मात्र विरह वर्णन नहीं तो इसके साथ सगुण की निर्गुण पर विजय तथा ज्ञान,योग की अपेक्षा प्रेम और भक्ति की श्रेष्ठता का आकर्षक चित्रण किया गया है । बहुत से भ्रमरगीतकारों ने 'श्रीमद्भागवत' के दशमस्कंध का आधार लिया है ।

भ्रमरगीत का यह विषय भक्तिकाल से लेकर आधुनिक काल तक लोकप्रिय रहा है । परिस्थिति के अनुसार इस परंपरा में अनेक परिवर्तन भी आये हैं। आज - कल भ्रमरगीतों के माध्यम से सामाजिक,आर्थिक चित्रण, आदर्शों की स्थापना, समाज - कल्याण, विश्व - प्रेम आदि अनेक बातों को चित्रित किया जा रहा है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१) भ्रमरगीत का काव्यवैभव
डॉ. मनमोहन गौतम
रीगल प्रकाशन, दिल्ली
प्र.सं. १९७०
पृष्ठ क्र. ९ ।

२) कृष्णकथा की परंपरा और सूरदास का काव्य
मैनेजर पांडेय
मैकमिलन इंडिया लिमिटेड ४ कम्युनिटी सेंटर
नारायण इंडस्ट्रियल, एरिया फेज फर्स्ट, नई दिल्ली ११००२८ ।

३) भक्तिकालीन काव्य में नारी
डॉ. गजानन शर्मा
रचना प्रकाशन ४५ ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण १९७२
पृष्ठ क्र. २५५ ।

४) नंददास का भँवरगीत - विवेचन और विश्लेषण
डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव
चैतन्य प्रकाशन, कानपुर
प्रथम संस्करण १९६२
पृष्ठ क्र. २९ ।

५) श्रीमद्भागवत
१०।४७।६ ।

12040

संदर्भ ग्रंथ सूची

६) श्रीमद्भागवत
१० । ४७ । ६१ ।

७) भ्रमरगीत का काव्यसौन्दर्य
सत्येन्द्र पारीक
सुशील प्रकाशन, पुरानीमंडी, अजमेर
प्रथम संस्करण १९६९
पृष्ठ क्र. १२ ।

८) भ्रमरगीत का काव्यवैभव
डॉ. मनमोहन गौतम
रीगल प्रकाशन, दिल्ली
प्र. सं. १९७०
पृष्ठ क्र. ११

९) हिन्दी कृष्ण काव्य में भ्रमरगीत
प्रो. सरला शुक्ल
नचिकेता प्रकाशन, विजयनगर डबलस्टोरी
प्रथम संस्करण १९८८
पृष्ठ क्र. ३० ।